लखनऊ बाल सुधार गृह के बाल अपराधियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

धर्मराज सिंह*
बबिता सिंह**

वर्तमान समय में हमारे समाज में बाल अपराधियों की संख्या में बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही है, जिसके लिए बहुत-से सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक कारक ज़िम्मेदार हैं। अपराधी बालकों को जेल में न रखकर बाल सुधार गृहों में रखा जाता है ताकि उनके व्यवहार में अपेक्षित सुधार लाया जा सके और वे आगे चलकर अच्छे नागरिक बन सकें। बाल अपराधी बालकों के व्यक्तित्व की क्या विशेषताएँ हैं? सामान्य बालकों से ये किस प्रकार भिन्न होते हैं? बाल अपराधियों के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन के लिए बाल अपराध गृहों एवं परिवारों द्वारा किस तरह के प्रयास किए जाने चाहिए, आदि प्रश्नों पर रोशनी डाल रहा है यह शोधपरक लेख।

सामाजिक जीवन में शांति और असुरक्षा का सीधा और सर्वाधिक घातक कारण अपराध ही होता है। प्रशासनिक व्यवस्था के एक बड़े भाग को परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से अपराधों के उन्मूलन और सामाजिक जीवन के नियमन में लगाना पड़ता है। वर्तमान समय में अपराधों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। अपराध जिसे सामाजिक व्यवस्था का विघटनकारी तत्त्व कहा जाता है। वास्तव में अपराध की फ़सल परिस्थिति की भूमि पर उत्पन्न होती है। किसी भी देश की असंतोषजनक परिस्थितियाँ बहुत हद तक अपराधी नागरिक उत्पन्न करने की ज़िम्मेदार होती हैं। हाल ही में ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रकाशित ''*क्राइम इन इंडिया 2010*'' की रिपार्टों को देखकर लगता है कि देश के अपराध शास्त्रियों को इस दिशा में गंभीरतापूर्वक सोचना

* *प्रोफ़ेसर*, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
** *शोधछात्रा*, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

है कि जिन बच्चों को भविष्य में एक ज़िम्मेदार नागरिक होना है आज वही अपने पथ एवं कर्तव्य से दूर होते जा रहे हैं और दिन प्रतिदिन उनमें अपराधी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज बालक सभी तरह के अपराधों में संलग्न हैं, चाहे वह हत्या हो, अपहरण हो, बलात्कार हो अथवा चोरी–डकैती। ये बच्चे उतने ही घातक हो सकते हैं जितने कि वयस्क अपराधी। हाल ही में हुई दिल्ली गेंग–रेप घटना जिसमें एक 18 वर्ष से कम आयु का बालक मुख्य अपराधी था, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक दूसरी घटना ग्रेटर नोएडा इलाके की है, जहाँ 12वीं कक्षा के एक विद्यार्थी की हत्या उसके ही चार किशोर साथियों द्वारा कर दी गई और उसकी लाश अलीगढ़ में पाई गई (टाइम्स ऑफ इंडिया, 14 जून, 2013)। जब कोई बालक समाज के नियमों, परंपराओं मर्यादाओं आदि का उल्लंघन करता है, अर्थात् समाज विरोधी व्यवहार करता है तो उसके व्यवहार को बाल अपराध कहते हैं। मनोवैज्ञानिक बर्ट ने कहा है कि, ''वह बालक अपराधी कहलाता है जिसकी समाजविरोधी प्रवृत्तियाँ इतनी गंभीर हो जाती हैं कि शासन को उसके विरुद्ध कार्यवाही करनी पड़ती है।'' बाल अपराधियों के व्यक्तित्व को अधिक प्रभावी बनाने की प्रासंगिकता पर पूर्व में कुछ अध्ययन हुये हैं जिनका विवरण निम्न है। पेसवर्क (1971), हामुर्थ एवं अन्य (1977), लहरी (1977), सिंह (1982), शर्मा एवं सिंह (1982), सिंह (1982), सैम्प्रू (1988), सुषमा (1990), कृष्णा और ऊषा (1993), सिंह (1996), देवी (2001), सिंह एवं उपाध्याय (2007), सिंह और सिंह (2009) आदि प्रमुख हैं। उपर्युक्त शोधकर्ताओं के अध्ययन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि बाल अपराधियों के व्यक्तित्व में विभिन्न गुण पाये गये। अपराधी प्रवृत्ति के बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक कुंठित, आश्रित, हठधर्मी, कम बुद्धि वाले, सांवेगिक रूप से अस्थिर तथा आक्रामक प्रवृत्ति के पाये गये। उपर्युक्त अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को देखते हुये यह ज्ञात करने की आवश्यकता हुई कि बाल अपराधी बालकों तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुणों में किस प्रकार की भिन्नता है।

उद्देश्य

- बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

उपर्युक्त निर्मित उद्देश्य के अध्ययन हेतु परिकल्पना के साथ कुछ उपपरिकल्पनाओं का निर्माण भी किया गया है जो निम्न प्रकार हैं–

- बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपपरिकल्पनाएँ

(i) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् सहृदय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(ii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अल्प बुद्धिमान बनाम् अधिक बुद्धिमान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(iii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण भावनाओं से प्रभावित होने वाला बनाम् भावनात्मक रूप से स्थिरता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(iv) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अप्रदर्शनात्मक बनाम् उत्तेजनीय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(v) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आज्ञाकारी बनाम् दृढ़ता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(vi) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् उत्साही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(vii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण नियमों का सम्मान न करना बनाम् कर्तव्यनिष्ठ में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(viii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण संकोची बनाम् साहसी में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(ix) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण दृढ़ विचार वाला बनाम् कोमल विचार वाला में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(x) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण जोशीला बनाम् व्यक्तित्व के प्रति सावधान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(xi) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आत्मविश्वासी बनाम् आशंकित में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(xii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सामाजिक रूप से समूह पर निर्भर बनाम् आत्मनिर्भर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(xiii) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अनियंत्रित बनाम् नियंत्रित में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(xiv) बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सहज बनाम् व्यग्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन विधि

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन के लिए लखनऊ के समस्त सरकारी बाल सुधार गृह में नामांकित बालकों को तथा हाईस्कूल में अध्ययनरत सभी सामान्य बालकों को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श

लखनऊ के बाल सुधार गृह में नामांकित 101 बाल अपराधियों को लिया गया है तथा हाईस्कूल में अध्ययनरत 115 सामान्य बालकों को भी लखनऊ से ही चुना गया है।

उपकरण

अध्ययन के उद्देश्य की अभिपूर्ति के लिए हाईस्कूल

व्यक्तित्व प्रश्नावली (कैटेल द्वारा निर्मित, हिंदी संस्करण, एस.डी. कपूर) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

अध्ययन की प्रकृति एवं उद्देश्यों के आधार पर आये हुये आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात विधि का प्रयोग किया गया है।

परिणाम तथा विवेचन

समस्या से संबंधित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर परिणामों को प्राप्त किया गया है। प्रस्तुत शोध समस्या के उद्देश्यों पर आधारित परिकल्पनाओं के संबंध में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये

तालिका 1

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् सहृदय की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.90	1.67	2.12*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.46	1.11		

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 1 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 2.12 है जो कि मुक्ताश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। अतः इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गम्भीर बनाम् सहृदय में सार्थक अंतर पाया गया। इस प्रकार शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.90) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.46) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक सहृदय पाये गये।

तालिका 2

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अल्प बुद्धिमान बनाम् आंशिक बुद्धिमान की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.65	1.47	3.76*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	4.57	1.35		

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 2 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी का मान 3.76 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः

0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुये कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अल्प बुद्धिमान बनाम् अधिक बुद्धिमान में सार्थक अंतर पाया गया। अत: शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.65) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (4.57) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान से अधिक है, अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक बुद्धिमान पाये गये।

तालिका 3

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण भावनाओं से प्रभावित होने वाला बनाम् भावनात्मक रूप से स्थिर की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.59	1.48	5.54*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.04	1.35		

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 3 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 5.54 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अत: 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण भावनाओं से प्रभावित होने वाला बनाम् भावनात्मक रूप से स्थिर में सार्थक अंतर पाया गया। अत: शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.59) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.04) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक भावनात्मक रूप से स्थिर पाये गये।

तालिका 4

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अप्रदर्शनात्मक बनाम् उत्तेजनीय की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	4.02	1.58	3.07*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.07	1.27		

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 4 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 3.07 है, जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है।

अत: 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अप्रदर्शनात्मक बनाम् उत्तेजनीय में सार्थक अंतर पाया गया। इस प्रकार शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.02) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.07) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक उत्तेजनीय पाये गये।

तालिका 5

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आज्ञाकारी बनाम् आग्रही की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	*समूह*	*मध्य-मान*	*मानक विचलन*	*टी-अनुपात*	*सार्थकता स्तर*
1	बाल अपराधी	4.27	1.87	1.71	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.34	1.67		

0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 5 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 1.71 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से कम है। अत: 0.05 स्तर पर यह असार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आज्ञाकारी बनाम् आग्रही व्यक्तित्व गुण में समान रूप से पाये गये।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.27) पाया गया और सामान्य बालकों का मध्यमान (5.34) पाया गया है। स्पष्ट है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अत: हम कह सकते हैं कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आज्ञाकारी बनाम् आग्रही में समान रूप से पाये गये।

तालिका 6

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गम्भीर बनाम् उत्साही की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	*समूह*	*मध्य-मान*	*मानक विचलन*	*टी-अनुपात*	*सार्थकता स्तर*
1	बाल अपराधी	4.02	1.58	3.07*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.07	1.27		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 6 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 3.07 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अत: 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा

सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् उत्साही में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.02) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.07) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक उत्साही पाये गये।

तालिका 7

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण नियमों का सम्मान न करना बनाम् कर्तव्यनिष्ठ की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.47	1.60	4.42*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	4.70	1.84		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 7 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 4.42 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण नियमों का सम्मान न करना बनाम् कर्तव्यनिष्ठ में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.47) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (4.70) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक कर्तव्यनिष्ठ पाये गये।

तालिका 8

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण संकोची बनाम् साहसी की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	4.29	1.87	2.34*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.51	1.36		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 8 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 2.34 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा

सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण संकोची बनाम् साहसी में सार्थक अंतर पाया गया। अत: शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.29) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.51) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक साहसी पाये गये।

तालिका 9

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण दृढ़ विचार बनाम् कोमल विचार की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	*समूह*	*मध्य-मान*	*मानक विचलन*	*टी-अनुपात*	*सार्थकता स्तर*
1	बाल अपराधी	4.04	1.80	2.83*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.77	1.07		

0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 9 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 2.83 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अत: 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण दृढ़ विचार बनाम् कोमल विचार में सार्थक अंतर पाया गया। अत: शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.04) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.77) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक कोमल विचार वाले पाये गये।

तालिका 10

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण जोशीला बनाम् व्यक्तित्व के प्रति सावधान की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	*समूह*	*मध्य-मान*	*मानक विचलन*	*टी-अनुपात*	*सार्थकता स्तर*
1	बाल अपराधी	3.82	1.31	4.95*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	4.77	2.02		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 10 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 4.95 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अत: 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा

जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण जोशीला बनाम् व्यक्तित्व के प्रति सावधान में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.82) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (4.77) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक व्यक्तित्व के प्रति अधिक सावधान पाये गये।

तालिका 11

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आत्मविश्वासी बनाम् आशंकित की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	4.02	1.58	3.07*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.07	1.27		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 11 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 3.07 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आत्मविश्वासी बनाम् आशंकित में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (4.02) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.07) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक आशंकित पाये गये।

तालिका 12

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सामाजिक रूप से समूह पर निर्भर बनाम् आत्मनिर्भर की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.91	1.67	3.95*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	4.46	1.66		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 12 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी-अनुपात का मान 3.95 है जो कि मुक्तांश (df)- 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए

कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सामाजिक रूप से समूह पर निर्भर बनाम् आत्मनिर्भर में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.91) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (4.46) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक आत्मनिर्भर पाये गये।

तालिका 13

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अनियंत्रित बनाम् नियंत्रित की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.91	1.49	2.66*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	4.85	1.34		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 13 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी–अनुपात का मान 2.66 है जो कि मुक्तांश (df)– 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अनियंत्रित बनाम् नियंत्रित में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.91) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (4.85) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक नियंत्रित पाये गये।

तालिका 14

बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सहज बनाम् व्यग्र की तुलना को दर्शाते हुये मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात की तालिका

क्रम	समूह	मध्य-मान	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
1	बाल अपराधी	3.49	1.59	3.46*	0.05 स्तर पर सार्थक
2	सामान्य बालक	5.09	1.57		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 14 के परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधी और सामान्य बालकों के लिए परिगणित टी–अनुपात का मान 3.46 है जो कि मुक्तांश (df)– 214 के 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका मान (1.96) से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस

प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बाल अपराधी तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सहज बनाम् व्यग्र में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बाल अपराधी बालकों का मध्यमान (3.49) तथा सामान्य बालकों का मध्यमान (5.09) पाया गया। स्पष्ट है कि सामान्य बालकों का मध्यमान बाल अपराधियों के मध्यमान की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बाल अपराधी बालकों की तुलना में सामान्य बालक अधिक व्यग्र पाये गये।

निष्कर्ष

i. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् सहृदय में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक सहृदय पाये गये।

ii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अल्प बुद्धिमान बनाम् अधिक बुद्धिमान में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक बुद्धिमान पाये गये।

iii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण भावनाओं से प्रभावित होने वाला बनाम् भावनात्मक रूप से स्थिर में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक भावनात्मक रूप से स्थिर पाये गये।

iv. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अप्रदर्शनात्मक बनाम् उत्तेजनीय में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक उत्तेजनीय पाये गये।

v. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आज्ञाकारी बनाम् आग्रही में कोई अंतर नहीं पाया गया।

vi. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण गंभीर बनाम् उत्साही में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक उत्साही पाये गये।

vii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण नियमों का सम्मान न करना बनाम् कर्तव्यनिष्ठ में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक कर्तव्यनिष्ठ पाये गये।

viii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण संकोची बनाम् साहसी में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक साहसी पाये गये।

ix. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण दृढ़ विचार बनाम् कोमल विचार में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक कोमल विचार वाले पाये गये।

x. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण जोशीला बनाम् व्यक्तित्व के प्रति सावधान में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक व्यक्तित्व के प्रति सावधान पाये गये।

xi. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण आत्मविश्वासी बनाम् आशंकित में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक आशंकित पाये गये।

xii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सामाजिक रूप से समूह पर निर्भर बनाम् आत्मनिर्भर में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक आत्मनिर्भर पाये गये।

xiii. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण अनियंत्रित बनाम् नियंत्रित में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक नियंत्रित पाये गये।

xiv. बाल अपराधी और सामान्य बालकों के व्यक्तित्व गुण सहज बनाम् व्यग्र में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि बाल अपराधियों की तुलना में सामान्य बालक अधिक व्यग्र पाये गये।

शैक्षिक प्रक्रिया में बालक एक महत्वपूर्ण कारक है। बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु उसके जीवन लक्ष्यों के निर्धारण मार्ग में सुधारगृह के शिक्षकों तथा परिवारजनों द्वारा उनके वांछनीय व्यवहार को प्रोत्साहित करना होगा जो उनके व्यक्तित्व के निर्माण करने में सहयोगी है। बालक के जीवन में असफलता, असंतोष, कुंठा आदि का परामर्शदाता के सहयोग से दूर करने का प्रयास किया जाये। बाल सुधारगृह में बालक अत्यंत विषम परिस्थितियों से लाये जाते हैं एवं विषम परिस्थितियों को झेल भी रहे होते हैं। वहाँ के कर्मचारियों को चाहिए कि वे बालकों के साथ सहयोगात्मक एवं सहानुभूतिपूर्ण ढंग से पेश आएँ तथा बालकों की भावनाओं को समझने का प्रयास करें। इससे बालकों में भावनात्मक एवं उनके व्यक्तित्व का विकास होगा। बाल अपराधियों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए और अधिक शोध किये जाने चाहिए ताकि बाल अपराधियों की समस्याओं का अधिक से अधिक निदान हो सके।

उपर्युक्त सुझावों के अतिरिक्त समाज में भी इन बाल अपराधियों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को जागृत करना आवश्यक है। विभिन्न

प्रकार की सामाजिक संस्थाएँ समय-समय पर बाल सुधार गृहों में जाकर इन बालकों के साथ अंत:क्रिया करके उनमें आत्मविश्वास का संचार कर सकती है तथा बालकों को यह अनुभव कराने में सफल हो सकती हैं कि वे इस समाज का एक अभिन्न अंग हैं। मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदाता के सहयोग से बाल अपराधियों के व्यक्तित्व विकास में एक महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है जिससे बाल अपराधियों के व्यक्तित्व में चतुर्दिक विकास किया जा सके।

संदर्भ

क्राइम इन इंडिया. 2010. *नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो, मिनिस्ट्री ऑफ़ होम अफ़ेयर्स, गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया*, नयी दिल्ली

कुमारी, एस. 1990. *स्टडी ऑफ़ पर्सनालिटि कैरेक्टरिस्टिक्स्, इंटेलिजेंस, एचीवमेंट मोटिवेशन, एडजस्टमेंट एंड सोशिया-इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ़ जूवेनाइल एंड एडल्ट फ़िमेल आफ़ेंडर्स,* इन बुच एम.बी. (प्रकाशित), *फ़िफ़्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन,* नयी दिल्ली - एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 829

कृष्णा और ऊषा. 1993. *एडोलोसेट्स डेलिनक्वेंट बिहेवियर एंड पर्सनालिटि, इंडियन जर्नल ऑफ क्रिमिनोलॉजी* 21(3) पृ.90-94

बूरचर्जड, जी. और बूरचर्जड एस. 1987., *'प्रिवेंशन ऑफ डेलिनक्वेंट बिहेवियर.* नयी दिल्ली : सेज पब्लिकेशन

देवी, यू.एल. और मयूरी, के. 2001. *'पर्सनालिटि प्रोफाइल ऑफ एडोलोसेंट डेलिनक्वेंट्स, जर्नल ऑफ कम्यूनिटि गाइडेंस एंड रिसर्च.* 18(2) पृ. 157-151

पेसवर्क, आर.ए. 1971. एसोसियेटेड पर्सनालिटि डिफरेंसेज़ इन डेलिनक्वेट्स एंड नॉन डेलिनक्वेंट्स, *जर्नल ऑफ पर्सनेलिटि एसेसमेंट.* 35(2) पृ. 159-161

यू.एस. 1976. *ऐक्सेप्शनल चिल्ड्रेन*, स्टर्लिंग पब्लिशर, नयी दिल्ली

लहरी, एस.के. 1977. *डिफरेंशियल पर्सनालिटि ऑफ नार्मल वेगाबाँड एंड डेलिनक्वेंट चिल्ड्रेन*, पीएच.डी. थिसिस इन बुच एम.बी. (प्रकाशित), *फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली, पृ. 413

शर्मा, आर.पी. और गुंथे आर.के. एवं सिंह, हेन. 1982. *पर्सनालिटि कोरिलेट्स ऑफ जूवेनाइल डेलिनक्वेंसी', इंडियन जर्नल ऑफ़ किलिनिकल साइकोलॉजी.* 9(1) पृ. 43-45

शर्मा, बी. 1989. *जूवेनाइल डेलिनक्वेंट्स् एंड देयर सोशल कल्चर.* उप्पल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

सिंह, एच.बी. 1982. *ए स्टडी ऑफ़ एटिट्यूड एंड पर्सनेलिटि एडजस्टमेंट ऑफ़ दि स्टूडेंट ऑफ क्रिमिनल ट्राइब्स*, पीएच.डी. थिसिस इन बुच, एम.बी. (प्रकाशित) *फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.* नयी दिल्ली - एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 203

सिंह और उपाध्याय. 2007. अपराधी और गैर–अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, *इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस रिसर्चेस्,* 3(1) पृ. 17–21

सिंह और सिंह. 2009. *ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ़ पर्सनालिटि ट्रेट्स विटविन जूवेनाइल डेलिनक्वेंट्स एंड नार्मल चिल्ड्रेन. जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड स्टडीज़,* 62(1) पृ. 6–13

सेठ, हं. 1961. *जूवेनाइल डेलिनक्वेंसि इन एन इंडियन सेटिंग्स.* पापुलर बुक डिपो, बॉम्बे

सैम्प्रू, ए.के. 1988. *पर्सनालिटि कोरिलेट्स (एक्ट्रवरजन, इंट्रोवरजन, न्यूट्रिसिज़्म एंड डेलिनक्वेंसी) एंड रियेक्शन टू फ्रसटेशन एमंग हाई एंड हायर सेकेंडरी स्कूल ब्वॉयज़ ऑफ श्रीनगर डिस्ट्रिक.* पीएच.डी. थिसिस इन बुच एम.बी. (प्रकाशित), *फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली पृ. 974

हामुर्थ एवं अन्य. 1977. *इमपल्स कंट्रोल एंड सम पर्सनालिटि डाइमेंसस् ऑफ़ जूवेनाइल डेलिनक्वेंट्स एंड नॉन डेलिनक्वेंट्स, साइकोलॉजी पिटरेज.* 19(3) पृ. 340–354